

हरिकथामृथसार  
विघ्नेश्वरस्तोत्र संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे  
परम भगवधभक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

श्रीशानंघ्रि सरोजभृंग म  
हेशसंभव मन्मनदोळु प्र  
काशिसनुदिन प्राथिसुवे प्रेमातिशयदिंद  
नी सलहु सज्जनर वेद  
व्यास करुणापात्र महदा  
काशपति करुणाळु कैपिडिदेम्मनुद्धरिसु २८-०१

ऐकदंत इभेंद्रमुख चा  
मीकरकृत भूषणांग कृ  
पा कटाअदि नोडु विज्झन्यापिसुवेनिनितेंदु  
नोकनीयन तुतिसुतिप्प वि  
वेकिगळ सहवास सुखगळ  
नी करुणिसुवुदेमगे संतत परमकरुणाळु २८-०२

विघ्नराजने दुविषयदोळु  
मग्रवागिह मनवु महदो  
षघ्नंघ्रि सरोजयुगळदि भक्तिपूवकदि  
लग्नवागलि नित्य नरक भ  
याग्रिगळिगानंजे गुरुवर  
भग्रगैसेन्नवगुणगळनु प्रतिदिवसदल्लि २८-०३

धनप विश्वक्सेन वैद्या  
श्विनिगळिगे सरियेनिप षण्मुख  
ननुज शेषशतस्थ देवोत्तम्म वियदंग्गा  
विनुत विश्वोपासकने स

न्मनदि विज्झन्यापिसुवे लकुमी  
वनितेयरसन भक्तिज्झन्यानव कोट्टु सलुहुवुदु २८-०४

चारुदेषणाह्वयनेनिसि अव  
तार माडिदे रुक्मिणीयलि  
गौरियरसन वरदि उद्धटराद राअसर  
शौरियाज्झन्यदि संहरिसि भू  
भारविळ्ळुहिद करुणि त्वत्पा  
दारविंदके नमिपे करुणिपुदेमगे सन्मतिय २८-०५

शूपकणद्वय विराजित कं  
दपशर उदिताकसन्निभ  
सपवर कटिसूत्र वैकृतगात्र सुचरित्र  
स्वपितांकुश पाशकर खळ  
दभंजन कमसाइग  
तपकनु नीनागि तृप्तिय पडिसु सज्जनर २८-०६

खेश परम सुभक्तिपूवक  
व्यासकृत ग्रंथगळनरितु प्र  
यासविल्लुदे बरेदु विस्तरिसिदेयो लोकदोळु  
पाशपाणिये प्राथिसुवेनुप  
देशिसेनगदरथगळ करु  
णासमुद्र कृपाकटाअदि नोडुव प्रतिदिनदि २८-०७

श्रीशनतिनिमल सुनाभी  
देशवस्थित रक्त गंधा  
तिशोभितगात्र लोकपवित्र सुरमित्र  
मूषकसुवरवहन प्राणा  
वेशयुत प्रख्यात प्रभु पू  
रैसु भक्तरु बैडिदिष्टाथगळ प्रति दिनदि २८-०८

शंकरात्मज दैत्यरिगति भ  
यंकरगतिगळीय लोसुग  
संकट चतुथिगनेनिसि अहिताथगळ कोट्टु  
मंकुगळ मोहिसुवे चक्रद  
रांकितन दिनदिनदि त्वत्पद  
पंकजगळिगे बिन्नैसुवेनु पालिपुदु एम्म २८-०९

सिद्ध विद्याधरगण समा  
राध्य चरणसरोज सवसु  
सिद्धिदायक शीघ्रदिं पालिपुदु बिन्नपव  
बुद्धि विद्य ज्झन्यान बल परि  
शुद्ध भक्ति विरक्ति निरुतन  
वद्यन स्मृतिलीलेगळ सुस्तवन वदनदलि २८-१०

रक्तवासद्वय विभूषण  
उक्ति लालिसु परमभगव  
द्धक्तवर भव्यात्म भागवतादिशास्त्रदलि  
सक्तवागलि मनवु विषय  
विरक्ति पालिसु विध्वधाध्य वि  
मुक्तनेंदेनिसेन्न भवभयदिंदलनुदुनदि २८-११

शुक्र शिष्यर संहरिपुदके  
शक्र निन्ननु पूजिसिदनु उ  
रुक्रमश्रीरामचंद्रनु सेतुमुखदल्लि  
चक्रवतिप धमराजनु  
चक्रपाणिय नुडिगे भजिसिद  
वक्रतुंडने निन्नोळेंतुटो ईशानुग्रहवु २८-१२

कौरवेंद्रनु निन्न भजिसद  
कारणदि निजकुल सहित सं  
हार ऐदिद गुरुवर वृकोदरन गदेयिंद

तारकांतकननुज एन्न  
शरीरदोळु नीनितु धम  
प्रेरकनु नीनागि संतैसेन्न करुणदलि २८-१३

ऐकविंशति मोदक प्रिय  
मूकरनु वाग्मिगळ माळपे कृ  
पाकरेश कृतज्झन्य कामद कायो कैपिडिदु  
लेखकाग्रणि मन्मनद दु  
व्याकुलव परिहरिसु दयदि पि  
नाकि भाया तनुज मृद्धव प्राथिसुवे निन्न २८-१४

नित्य मंगळ चरित जगदु  
त्पत्तिस्थिति लय नियमन ज्झन्या  
नत्रयपद बंधमोचक सुमनसासुर  
चित्तवृत्तिगळंते नडेव प्र  
मत्तनल्ल सुहृज्जनाप्तन  
नित्यदलि नेनेनेनेदु सुखिसुव भाग्य करुणिपुदु २८-१५

पंचभेद ज्झन्यानवरुपु वि  
रिचिजनकन तौरु मनदलि  
वांछितप्रद ओलुमेयिंदलि दासनेंदरिदु  
पंचवक्त्रन तनय भवदोळु  
वंचिसदे संतैसु विषयदि  
संचरिदंददलि माडु मनादिकरणगळ २८-१६

ऐनु बैडुवुदिल्ल निन्न कु  
योनिगळु बरलंजे लकुमी  
प्राणपति तत्वेशरिदोडगूडि गुणकाय  
ताने माडुवनेंब ई सु  
ज्झन्यानवने करुणिसुवुदेमगे म  
हानुभाव मुहुमुहुः प्राथिसुवेनिनितेंदु २८-१७

नमो नमो गुरुवय विबुधो  
त्तम विवजितनिद्र कल्प  
द्रुमनेनिपे भजकरिगे बहुगुणभरित शुभचरित  
उमेय नंदन परिहरिस  
हंममते बुद्ध्यादिं द्रियगळा  
क्रमिसि दणिसुतलिहवु भवदोळगाव कालदलि २८-१८

जयजयतु विघ्नेश ताप  
त्रयविनाशन विश्वमंगळ  
जयजयतु विद्याप्रदायक वीतभयशोक  
जयजयतु चावांग करुणा  
नयनदिंदलि नोडि जनुमा  
मय मृतिगळनु परिहरिसु भक्तरिगे भवदोळगे २८-१९

कडुकरुणि नीनेंदरिदु हे  
रोडल नमिसुवे निन्नाडिगे बें  
बिडदे पालिसु परम करुणासिंधु एंदेंदु  
नडु नडुवे बरुतिप्प विघ्नव  
तडेदु भगवन्नाम कीतने  
नुडिदु नुडिसेंनिंद प्रति दिवसदलि मरेयदले २८-२०

ऐकविंशति पदगळेनिसुव  
कोकनद नवमालिकेय मै  
नाकितनयांतगत श्रीप्राणपतियेनिप  
श्रीकरजगन्नाथविट्टल  
स्वीकरिसि स्वगापवगदि  
ता कोडुव सौख्यगळ भक्तरिगाव कालदलि २८-२१